तृतीय अध्याय

३.० " फणीश्वरनाथ रेणु के " मैला आँचल " में समाज चित्रण "

३.१ प्रस्तावना

३.२ उच्चवर्गीय समाज का चित्रण

३.३ मध्यवर्गीय समाज का चित्रण

३.४ फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में निम्नवर्गीय समाज का चित्रण

३.५ निम्नवर्ग का सामाजिक पक्ष

३.६ निम्नवर्ग का आर्थिक पक्ष

३.७ निम्नवर्ग की धार्मिक परिस्थिति

३.८ निम्नवर्ग का सांस्कृतिक पक्ष

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

" फणीश्वरनाथ रेणु के " मैला आँचल " में समाज चित्रण "

३.१ प्रस्तावना -

फणीश्वर रेणु का आँचलिक उपन्यास " मैला आँचल " को सर्वश्रेष्ठ आँचलिक कृति माना गया है। इसका कथानक है पूर्णिया जिले का। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है। इसके एक ओर नेपाल है, दूसरी ओर पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल है। इस प्रकार " मैला आँचल " पूर्णिया के एक पिछडे गाँव- मेरीगंज की कथा है। इस उपन्यास में पूरे समाज का चित्रण किया है। इस उपन्यास में अच्छाइयाँ या बुराइयाँ दोनों का भी चित्रण किया गया है। पुस्तक की भूमिका में रेणुजी ने अपने मन्तव्य को इन शब्दों में स्पष्ट किया है -

" यह है मैला आँचल एक आँचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है, इसके एक ओर है नेपाल दूसरी ओर पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल। विभिन्न सीमा - रेखाओं से इसकी बनावट मुकम्मल हो जाती है, जब हम दक्खिन में सन्थाल परगना और पश्चिम में मिथिला की सीमा - रेखाएँ खींच देते है। मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछडे गाँवों का प्रतीक मानकर - इस उपन्यास -कथा का क्षेत्र बनाया है।

" इसमें फूल भी है, शूल भी, धूल भी है, गुलाल भी, कीचड भी है, चंदन भी, सुंदरता भी है, कुरूपता भी मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया। " १

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है कि " मैला आँचल " में समाज - चित्रण तो अवश्य ही है। इन्होंने सुंदरता के साथ कुरूपता का भी चित्रण किया है। फूल भी शूल भी है। इसका मतलब समाज की कठिन परिस्थितियों का भी चित्रण है। साथ - साथ आनंदमयी प्रवृत्तियों का भी चित्रण किया है। मैला आँचल में समाज के जातिगत वैमनस्य का भी चित्रण किया है। मेरीगंज के लोग जातीय वर्गों में बँटे हुये है। राजपूत, कायस्थ, ब्राह्मण, यादव आदि जो समाज में जातियाँ है उनमें झगडे होते हैं। जातिगत ऊँच - नीच की यह भावना, सामूहिक प्रसन्नता के अवसर पर भी लोगों को एक साथ भोज तक के लिए परस्पर मिलने नहीं देती। हमारी एकता के प्रयास में बहुत बडी बाधा उत्पन्न करती है। पंचायत में जातिगत भाव गहरा पडा हुआ है। इतना ही नहीं तो यहाँ के लोग बाहर से आये डॉ॰ प्रशान्त की जाति भी मालूम करना चाहते है। डॉ॰ प्रशान्त शुद्ध और उदात्त मानवियता से प्रेरित हो मेरीगंज में आये हैं। मेरीगंज के लोगों की दृष्टि से जाति चीज बहुत बडी है। सिर्फ हिंदू कहने से ही पिंड नहीं छूट सकता।

" ब्राहमण है ?:······ कौन ब्राहमण। गोत्र क्या है ? मूल कौन है ? ······· शहर में कोई किसी से जात नहीं पूछता। शहर के लोगों की जाति का क्या ठिकाना ? लेकिन गाँव में तो बिना जाति के आप का पानी नहीं चल सकता। " [2]

वस्तुत: यह बात बडी विचित्र लगती है कि इस संक्रान्तिकाल में एक ओर राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित भारतीय समाज एक स्वर में अंग्रेजी शासन के विरूद्द उठ खडा हुआ और दूसरी ओर स्वयं उसमें नगर ही नहीं ग्राम्य और आँचलिक स्तर पर भी जातिवाद का विष बीज विकास पा रहा , जिससे व्यक्ति - व्यक्ति के बीच मतभेद की खाई गहरी हो गयी और व्यक्ति - समाज जातिगत आधार पर अलग - अलग समूहों में विभाजित और विच्छिन्न होकर परस्पर द्वेष, ईर्ष्या और शत्रुता के भाव को बढाता हुआ राष्ट्रीय शक्ति, एकता और उदात्त मानवीयता के आदर्शों को धूमिल करता रहा।

धर्म के नाम पर पाखंड, आडम्बर, अंधविश्वास और व्यभिचार का प्रचार तथा प्रसार बहुत पुरानी परंपरा है। इसका जीता - जागता चित्र मठों में मिलता है। महंत, सेवादास, रामदास लरसिंघदास, बूढे जोतिखी, नागा बाबा ये सभी चरित्र धार्मिक पाखंड के प्रसिध्द नमूने है। महंत सेवादास ने लछमी कोठारिन को अपने मठ में

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

दासी के आवरण में रखैल बनाकर रखा है। " महंत जबल लछमी दासिन को मठ पर लाया था तो वह एकदम अबोध थी, एकदम नादान। एकही कपडा पहनती थी। कहाँ वह बच्ची और कहाँ वह पचास बरस का बूढा गिद्ध। "

रोज रात में लछमी रोती थी - ऐसा रोना कि जिसे सुनकर पत्थर भी पिघल जाए। " 3

सेवादास की भाँति रामदास भी व्यभिचारी है। रामदास सेवादास का सेवक है। सेवादास की मृत्यु के पश्चात मठ की महंती रामदास को मिलती है। एक डेढ महिने की महंती में ही रामदास का कलेवर बदल जाता है। वह लछमी को अपने निकट बुलाने लगता है। रात्रि की एकांतिकता में वह धीरे - से उठकर लछमी की कोठरी के पास जाता है। लकडी फँसाकर किवाड की चिटकनी खोलता है। और अस्त - व्यस्त कपडों में सोई पडी लछमी को भोगने की इच्छा उसके मन में प्रबल हो उठती है। नागा बाबा, लरसिंघदास आदि सभी लोग पाखंडी है। अशिक्षितों और भोले - भाले ग्रामीणों के बीच इस पाखंड प्रसार में जोतिखी कहनेवाले लुटेरों का भी कम योग नहीं है। गाँव में " इसपिताल " का खुलना जोतिखी के लिए अशुभ लक्षण है। वह भविष्य की चिंता बतलाकर ग्रामीणों में भय बनाए रखता था। उन्हें

शंका है कि कुओं में दवा डालकर हैजा फैलाया जायेगा।

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट होता है कि हमारे समाज में एक वर्ग ऐसा है जो अपने स्वार्थ के लिए एक ओर समाज में होनेवाली प्रत्येक प्रकार की प्रगति का विरोध करता है, तो दूसरी ओर धर्म के नाम पर अनेक प्रकार की विसंगतियों और पाखंडों को बढावा देकर अधर्म फैलाता है और चारित्रिक पतन का कारण बनता है। साम्प्रदायिकता, वर्ग संघर्ष, अस्पृश्यता, भूख और बेकारी जैसी सामाजिक समस्याओं में पूरा गावं जल रहा है। इस प्रकार गाव के मठ के भ्रष्ट वातावरण को दिखाकर लेखक भारतीय समाज की धार्मिकता का पर्दाफाश करता है। समाज में वर्गीय शोषण भी हो रहा है। संथालों की तरह गाँव के मजदूरों का भी शोषण जमीनदारों के माध्यम से समाज में ही हो रहा है। गाँव के महाजन सामान्य वर्गीय व्यक्ति का शोषण करते है। गाँव के स्त्री - पुरुषों के गलत शारीरिक सम्बन्ध भी सामाजिक स्थिति को डावाडोल बना देते है। फुलिया खलासी से विवाह रचाती है और " पैटमान " तथा सहदेव मिसिर से अनैतिक सम्बन्ध रखती है। यही स्थिति रामपियारिया और रोधिया भी है। चरखा संघ की मंगल देवी के बारे में अनेक किस्से प्रचलित है। इससे स्पष्ट

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

होता है कि समाज में नैतिकता का अधःपतन हो गया है। मैला आँचल के पूर्व - उत्सवों, विवाहादि मांगलिक कार्यों, सामाजिक यथार्थ और चेतना तथा राष्ट्रीय संदर्भों को सशक्त अभिव्यक्ति देने का काम लोकगीतों ने ही किया। अंचल में सामाजिक चेतना केवल नाम के लिए ही है। परन्तु वहाँ के लोगों की संवेदना और भावनाशीलता समाप्त नहीं हो गयी है। यह भाव लोकगीतों की पंक्तियों के माध्यम से दिखायी देता है। समाज में पर्वों, त्यौहारों को, नृत्यों को, गीतों के साथ मनाते है। ऐसे समय समाज के सभी लोग एक होकर होली जैसा त्यौहार आनंद से मनाते हैं।

सारांशतः समाज में एक ओर व्यभिचार, जातिगत भेद है, तो दूसरी ओर नृत्य गीत के कारण आनंद का वातावरण भी फैला गया है। " मैला आँचल " इस उपन्यास के समाज को तीन वर्गों में विभाजित करके समाज चित्रण का रेखांकन किया जा सकता है। -

३.२ उच्चवर्गीय समाज का चित्रण -

" मैला आँचल " में मेरीगंज की कथा है। मेरीगंज में प्रमुख रूप से चार जाति के लोग रहते है। ब्राहमण टोली, कायस्थ टोली, राजपूत टोली, यादव टोली। राजपूत टोली के मुखिया रामकिरपालसिंघ है।

रामकिरपालसिंघ निरक्षर होते हुए भी भगवानने उन्हें उच्चजाति में जन्म देने के कारण वे राजपुत टोली के मुखिया बन गये हैं। ये तीन सौ बीघे जमीन के मालिक है। उन्होंने सास के श्राध्द में अपनी जाति के लोगों को पूरी मिठाई और अन्य जाति के लोगों को दहीचूडा खिलाया था। सिंघजी यादव टोली के " बदमाशों " का सीना तानकर चलना बर्दाश्त नहीं कर सकते।

कायस्थ टोली के मुखिया विश्वनाथप्रसाद मल्लिक, राज पारबंगा के तहसीलदार है। तहसीलदार साहब भी आज एक हजार बीघे जमीन के एक बहुत बडे मालिक है। कायस्थ टोली को मालिक टोला भी कहा जाता है।

यादव टोली के मुखिया खेलावन यादव है। इनके बारे में कहा गया है कि " इनके मुखिया खेलावन यादव को दस - बरस पहले तक लोगों ने भैंस चराते देखा है। दूध - घी की बिक्री से जमाए हुए पैसे की बात जब चारो ओर बुरी तरह फैल गयी तो खेलावन को बडी चिंता हुई। महीनों तहसीलदार के यहाँ दौडते रहे, सर्किल मैनेजर को डाली चढाई, सिपाहियों को दूध - घी पिलाया और अंत में कमला के किनारे पचास बीघे जमीन की बंदोबस्ती हो सकी। "4
१, १६ इससे स्पष्ट होता है कि ये भ्रष्टाचारी है। लोग इन्हें नया मातबर कहते है।

राजपूतों और कायस्थों में पहले से ही झगडे होते आये

है। जनेऊ लेने के बाद भी राजपूतों ने यदुवंशी क्षत्रिय की मान्यता नहीं दी। यादव टोली के लोगों ने भी समय - समय पर व्यंगविद्रूप बाणों से छेड़ा है। यादवटोली को कायस्थटोली के मुखिया तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद मल्लिक ने विश्वास दिलाया कि मामले मुकदमे की पूरी पैरवी करेंगे। इसके विरुद्ध राजपूतों को ब्राहमणटोली ने समझाया -

" जब - जब धर्म की हानि हुई है, राजपूतों ने ही उनकी रक्षा की है। " 5 इससे स्पष्ट होता है कि उच्चवर्गीय समाज भी संघर्ष से ग्रस्त है। सारे गाँव में भूमि का विषम विभाजन और धनिकों द्वारा निम्न वर्ग के लोगों का शोषण के कारण गरीबी फैली है। अनाज को ऊँचे दर से गांव के तीन ही व्यक्तियों ने फायदा उठाया है। इनमें तहसीलदार साहब, सिंघजी, खेलावनसिंह यादव आते हैं। छोटे - छोटे किसानों की जमीने कौडी के मोल बिक रही हैं। मजदूरों को सवा रुपये रोज मजदूरी मिलती है, लेकिन एक आदमी का पेट भी नहीं भरता। इस समस्या को बल देने में गाँव के जो मुखिया है तहसीलदार, खेलावनसिंह यादव आदि की स्वार्थी प्रवृत्ति का काफी योगदान है। अपने दायित्व के प्रति इनकी उपेक्षा के कारण जनसामान्य को अनेक यातनाएँ सहनी पड़ती है। तहसीलदार साहब ने धान तैयार होते ही न जाने कहाँ छिपा है। दरवाजे पर दर्जनों बखार हैं, लेकिन इस साल सब खाली चमगादड़ों के अड्डे हैं.... ...। " सरकार शायद धान जाँती का कानून बना रही है। गाँव के समृद्ध लोग

ग्रामीणों की सहायता करने के स्थान पर उनका शोषण करते हुये दिखाई देते हैं। ठाकुर रामकिरपालसिंघ मजदूरों से बिना मजूरी देते काम करवा लेते हैं। उस समय उनका हलवाहा इसके लिए विरोध करता है। भूमिधर किसानों के अंतस्तल में जमिदारों के शोषण की स्मृतियाँ अभी भी अंकित हैं। जमींदार भूमिहीन मजदूरों को अनेक प्रकार की यातनाएँ देकर अपनी आत्मसन्तुष्टि करते हैं। ये उच्चवर्गीय लोग आर्थिक स्तर पर विषम होते हुये भी सामाजिक तथा आर्थिक अधिकारों के प्रश्न पर एक जुट होकर निम्न वर्ग का विरोध करते हैं। गाँव के ये मुखिया लोग अपने हित साधना की चाल में व्यस्त रहते हैं और दूसरे लोगों को परास्त कर देते हैं। इन्होंने निम्नवर्गीय समाज का दोहन करके एक बडे समाज के पारस्परिक मानवीय सम्बन्ध को तोड डाला है।

डॉ॰ अंजली तिवारीजी ने कहा है -

" रेणु के उपन्यासों में व्यक्तिवादी मूल्य के भी संकेत मिलते हैं। " 6

उदाहरण लिए तहसीलदार पूरे गाँव के लिए प्रच्छन्न निर्दय व्यक्ति है, वे लोगों की संपत्ति हडपने के लिए बहुतसे तरीके अपनाते है। लेकिन अपनी पुत्री के संदर्भ में वे द्रवणशील बनते हैं। अपनी पुत्री के योगक्षेम की चिंता उन्हें सालती रहती है। उसके लिए वे कुछ भी त्यागने को तैयार है। अपने नाती के होने और दामाद के लौटने से खुश होकर लोगों के हडपे हुये खेत उन्हें वापस देता है। इससे भी उनका अपने कुटुंब के प्रति प्रेम और लोगों के प्रति सहानुभूति का गुण

दिखायी देता है। विश्वनाथ हर मौके का लाभ उठाता है और वह गरीबों को चूसता है। विश्वनाथ कायस्थ तहसीलदार है। कायस्थ, राजपूत, यादव को लडाने का कार्य ब्राहमण टोली के लोग करते हैं।

शासन के अधिकारी भी गाँव के लोगों को चूसते है। नीलहे साहबों ने नील के हौजों में इन्हीं मूक इन्सानों का पसीना बहाया है। इन्हें काम के बदले में कोई भी पैसे नहीं देता। १९४७ के कांग्रेसी मंत्रीमंडल के समय इस जिले में एक अंग्रेज कलक्टर आया था। उसने इस व्यवस्था को अन्याय समझकर सुधारने की चेष्टा की थी। इसके कारण जिले भर के भूमिहार, जमींदार और राजा घबरा गये थे। परंतु उन्होंने सबल प्रमाण पेश कर दिया था - संथालों के जोर - जुल्म का मुख्य कारण है यह अंग्रेज कलक्टर। इसी के बल पर वे कूद रहे हैं। इस कारण अंग्रेजी कलक्टर की तुरंत बदली हो गयी।

डॉ॰ प्रशान्त का विभाजन भी उच्चवर्गीयों में ही किया जाना चाहिए, परंतु प्रशान्त का संपूर्ण कार्यकलाप मानवीयता के उच्च आदर्शों से प्रेरित है। डॉ॰ प्रशान्त वहाँ की शोषित, अभावग्रस्त, भोली और दुःसंस्कारों में ग्रस्त जनता के प्रति अत्यन्त संवेदनशील है। और अपनी चेतना के विभिन्न स्तरोंद्वारा वे वहाँ के दुखी मानव समाज हित साधना में अपने संपूर्ण जीवन को व्यतित करना चाहते है। शोषण करनेवाले जमींदारों और तहसीलदारों

के बिल्कुल उल्टा इनका चरित्र निखर आता है। प्रशान्त मानवतावादी चरित्र है। कमली से उनका प्रणय व्यापार चलता है। शादी के पहले कमली गर्भवती हो जाती है और इसी के बीच ही डा॰ प्रशान्त को साम्यवादी होने के संदेह जेल भेज दिया जाता है। परंतु जेल से छुटने के बाद वह कमली का स्वीकार करता है। इससे डॉ॰ प्रशान्त का आदर्श पहलू दिखाई देता है।

निष्कर्ष: हम यह कह सकते है कि उच्चवर्गीय जो पात्र हैं वे समाज की गरीब जनता को चूसते है। उनसे मेहनत करवा लेते हैं। परंतु उसके बदले में कुछ देना नहीं चाहते। प्राचीन काल में जैसे प्रकार बेगार की पध्दति थी, उसी प्रकार का वातावरण " मैला आँचल " उपन्यास के समाज में है। गरीब किसानों से जमीन छीन ली जाती है। संथालों को भी ज्यादा काम और कम दाम दिया जाता है। प्रारंभ में ही बताया गया है कि जिलहा साहब मार्टीन की पत्नी " मेरी " के नाम से इस गाँव को मेरीगंज नाम रखवा दिया। तो किसी एक किसान के मुँह से मेरीगंज का पुराना नाम आया तो मार्टिन ने उसे कोड़ों से पिटवाया था। इससे स्पष्ट होता है कि अँग्रेजी अधिकारीअत्याचार करते थे। इसीलिए मेरीगंज की मिट्टी से पैदा हुए जो जमींदार, तहसिलदार है, उन्हें तो जनता पर इस प्रकार का बोझ नहीं लादना चाहिए था। लेकिन कहा जाता है कि मानव स्वार्थी होता है और सत्ता हाथ में आते ही वह कुछ भी कर सकता है। इसी के कारण ही

मेरीगंज की गरीब जनता का शोषण हुआ है। उसे चूसा गया है।

३.३ मध्यवर्गीय समाज का चित्रण -

हमारे समाज में अनेक वर्ग है। उच्चवर्ग, मध्यवर्ग, निम्नवर्ग। डॉ॰ अंजली तिवारीजी का कहना है कि " ग्रामीण संदर्भ में सामान्य खेतिहर लोग निम्न मध्यवर्ग के अंतर्गत आते है। ये प्राय: उच्चजातियों के होते है। बहुत कम लोग उच्च मध्य वर्ग में आते है। " 7 उच्चमध्यवर्ग के लोगों के पास अच्छी - खासी जमीन होती है। उनका रहन - सहन, खान - पान अपेक्षाकृत ऊँचा होता है। मध्यवर्गीय लोग भी निम्नवर्ग के लोगों के साथ झगडते है। उन्हें पिसने के प्रयास में लगे रहते है। मध्यवर्गीय लोगों की निम्नवर्गियों के घरों में घुसपैठ है। एक बात और ध्यान देने की है कि मध्यवर्गीय लोगों में विशेषत: मालिक तबके के लोगों में परस्पर बडी स्पर्धा रहती है। रेणु ने मालिक तबके और ऊंची जातियों के लोगों के पारस्पारिक सम्बन्धों को बडी कुशलता से पहचाना और उद्घाटित किया है।

"मैला आँचल " उपन्यास में वैसे देखा जाय तो संपूर्ण पात्रों के दो वर्ग ही किये जा सकते है - उच्चजाति के पात्र और निम्न-जाति के पात्र। 8 यह बात सही है कि दो वर्गों में ही पात्रों का विभाजन है। परंतु यहाँ जो पात्र आये है वे मध्यवर्गीय समाज का प्रतिनिधित्व

करते हुये दिखायी देते है। इसके अंतर्गत जो पहला पात्र है वह है - " बालदेव " जिसे यादव टोली के लोग बाँधकर मिलेटरी के पास ले आते हैं। बलिया उर्फ बालदेव स्वराजी है। इसीलिए सुराजियों को पकडनेवालों को सरदार बहादुर की तरफ से इनाम मिलता है। इसी इनाम को पाने के हेतु यादव टोली के लोग उसे बाँधकर लाते हैं। परंतु साहब के किराती बालदेव को पहचानते है और कहते है कि सर, यह रामकृष्ण कांग्रेस आश्रम का कार्यकर्ता, बडा बहादुर है। " 9 बालदेव देश सेवक है। वह कांग्रेसी और महात्मा गांधी का भक्त है। परंतु वैसे देखा जाय तो वह बगुला भगत है। बात - बात में वह " भारत माथा ", महतमा गांधी आंदोलन, अनसन और हिंसा की बात कहता है। परंतु वह भ्रष्टाचारी है। मनुष्य के खाने के दात अलग होते है और दिखाने के अलग। उसी तरह की बात बालदेव के बारे में हुयी है। वह कांग्रेस का कार्यकर्ता होने के बावजुद भी कपडा, चीनी और किरासन तेल के राशन में गोलमाल करता है। मध्यवर्गीय होते हुये भी वह राजनीतिक कार्यकर्ताओं के पाखंड और भ्रष्टाचार का नमुना बनकर प्रस्तुत हुआ है। बालदेव लोगों को हिंसात्मक आंदोलन न करने के लिए लोगों को प्रेरणा देता है। " भारत माता " उसे हमेशा जार - जार रोती हुई दिखलाई पडती है। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यही बालदेव अवसरवादी चरित्र के रूप में प्रकट होता है।

यह बालदेव उन असंख्य बालदेवों का प्रतीक है। जो आज भी गांधीजी की पूँछ को पकड़कर अपने स्वार्थों की पूर्ति में लगे हैं। समाजसेवा और देशभक्ति के नाम पर राष्ट्र की अशिक्षित और भोली - भाली जनता का शोषण कर रहे हैं। सभास्थल पर गांधीजी का सेवक बालदेव जब बोलने को खड़ा होता है तो सोशालिस्ट वासुदेव उसे बोलने से रोक देता है - " बालदेवजी आपका विख्यान हम लोग बहुत सुन चुके है। आप पुंजीवादी है। इस सभा में आप नहीं बोल सकते।। १० जनता भी इसके लिए विरोध करती है। लछमी दासिन जो निम्नवर्गीय है। उसके मन में बालदेव के प्रति प्रेम जागृत होता है। बालदेव के मन में भी उसके प्रति प्यार हो जाता है। जब लछमी बालदेव की आँखों में आँखे डालकर देखती है तो बालदेव न जाने कहा खो जाता है। बालदेव मठ की सताई गई, भोगी गई दासी लछमी को अपनाता है। बालदेव लछमी के बिना चन्दनपट्टी नहीं रह सकता। लछमी भी उसे जाने से रोकती है। बालदेव बावनदास के साथ रहता है। वासुदेव और सुंदरलाल भी मध्यवर्गियों के प्रतीक है। उन्हें भी गिरफ्फ कर लिया जाता है।

बालदेव के बिल्कुल विपरित मध्यवर्गीय समाज का एक पात्र कालीचरन है। कालीचरन साम्यवाद की चेतना लेकर

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

सारे सम्बन्धों को तोडना चाहता है, जो निम्न - जाति के व्यक्ति और उसके वर्ग के बीच बने हुये हैं। वह उच्च वर्ग और मध्यवर्ग के समाज के साथ भी बने हुये व्यक्ति के संबंध को तोडना चाहता है। वह अपने साथियों के साथ प्रचार करता है कि उच्च और मध्यवर्गीय समाज निम्नवर्गीय समाज के व्यक्तियों को जिन आर्थिक सामाजिक और धार्मिक संबंध सूत्रों से बांधे हुये है वे संबंध असुंदर और अमानवीय है। इसलिए उन्हें तोड देना चाहिए और संघर्षपूर्ण संबंध बनने चाहिए क्यों कि बिना संघर्ष के सुविधा-जीवी वर्ग मानवीय अधिकार नहीं देगा। कालीचरन के साथ निम्न वर्ग या पिछडे हुये वर्ग के कई लोग हैं, जो साम्यवाद के नामपर खातेपीते हैं। लेकिन कालीचरन में पिछडे वर्ग के नेता की आग भी है और ईमानदारी भी। वह धर्म के नामपर होनेवाले अत्याचारों को पहचानता है और विरोध करता है। इसीलिए वह लक्ष्मी को गाली देनेवाले नागा को मारता है। और खदेड देता है। बावनदास भी असली गांधीवादी के रूप में अतीत और वर्तमान की राजनीतिक परिस्थितियों का तनाव उपस्थित कर उस अंचल और देश की समकालीन राजनीति को उभारता है। सोशलिस्ट कालीचरण का साथी है। सोसरी और हिन्दू महासभाई हरिगौरी है। गांधी का प्रतीक बावनदास आत्महत्या कर लेता है। बालदेव, कालीचरन, बावनदास आदि पात्र आदर्श न होते हुये भी हमारी

सहानुभूति प्राप्त करने में सफल बन गये है। मध्यवर्गीय पात्र ग्राम्य जीवन के साथ अत्याधिक भावनात्मक होने के कारण कुछेक स्थलों पर आरोपित कहे जा सकते है।

गांधी का सच्चा भक्त, कर्मठ कार्यकर्ता और आदर्शोंपर आत्मबलिदान कर देनेवाला बावनदास भी एक क्षण के लिए तारावती के लिए दुर्बल हो उठता है। जोतखीजी कालीचरन की माँ के दुश्चरित्र का उद्घाटन करते है। चरखा सेंटर की मंगलादेवी भी मध्यवर्गीय समाज का ही प्रतीक है। वैसे देखा जाय तो मंगलादेवी मध्यवर्गीय होते हुये भी व्यभिचारी स्त्री है। पटना में जब वह ट्रेनिंग ले रही थी, तभी से उनके अनेक - अनेक पुरुषों से सम्बन्ध थे। इनसे मिलने के लिये कॉलेज के विद्यार्थी, साहित्य गोष्टी के मंत्रीजी, चर्खासंघ के कार्यकर्ता तथा कई हिंदी दैनिकों के सहायक, सम्पादक भी आते थे। गाँव में विकसित हो रही नई चेतना मलेरिया सेंटर तथा चरखा सेंटर खुलने के माध्यमसे व्यक्त होती है। मेरीगंज में आकर मंगलादेवी का चरित्र भी धीरे - धीरे बदलते हुये भारतीय नारी के परिवेश को अभिव्यक्त करता है।

बालदेवजीने बहुत बार भूत को अपने आँखों से देखा

है। भैंस के पीछे - पीछे छैनि तम्बाखू माँगता है। इस प्रकार के अनेक प्रसंगों के द्वारा अंचल में व्याप्त अंधविश्वासों को अभिव्यक्ति मिली है। सोमा भी मध्यवर्गीय समाज का पात्र है। सोमा का शरीर कालीचरन से भी ज्यादा बुलंद है। कालीचरन की देह में हाथी - दाँत का कडापन है और सोमा के चेहरे पर लोहे की कठोरता है। कालीचरन सामान्य लोगों के सुख दुखों की बात कहता है। वह आम आदमी के मन में शोषण और भ्रष्टाचार के खिलाफ आक्रोश उत्पन्न करना चाहता है। युगों से पीडित, दलित और उपेक्षित लोगों को कालीचरन की बातें अच्छी लगती है। मध्यवर्गीय होकर वह निम्न जाति के लोगों को जगाने का कार्य करता है। वह कहता है - " मै आप लोगों के दिल में आग लगाना चाहता हूँ। सोये हुये को जगाना चाहता हूँ। सोशलिस्ट पार्टी आपकी पार्टी है , गरीबों की, मजदूरों की पार्टी है। सोशलिस्ट पार्टी चाहती है कि आप अपने हकों को पहचाने। आप भी आदमी है, आपको आदमी का सभी हक मिलना चाहिए। मैं आप लोगों को मीठी बातों में भुलाना नहीं चाहता। वह काँगरेसी का काम है। मैं आग लगाना चाहता हूँ। " 17 कालीचरन अपने वक्तव्य से आग उगालता है। लेकिन सुननेवाले का कलेजा ठंडा होता है। बाद में कालीचरन को भी गिरफ्त कर लिया जाता है। लेकिन उसने फैसला कर लिया है कि मोका मिलते ही

वह जरूर भागेगा। और सचमुच ही वह जेलसे भागता है। बालदेवजी ने वैरागी धर्म स्वीकार करना चाहा है। बालदेवजी गृहस्थी नहीं रह जाते। कालीचरन और मंगला में भी प्यार हो जाता है। मंगला जब बीमार पडती है तो कालीचरन ही उसकी सेवा करता है।

मध्यवर्गीय बालदेव का यदि बाल्यकाल देखेंगे तो दिखायी देता है कि मानवीयता का अंश उसके बचपन से लेकर है। बचपन से ही बालदेव ने बडी मार खायी है। इस प्रकार के जीवन में उसके लिए समती का ही एकमात्र सहारा था। समती उसे बूढे- बुढियों की आँख बचाकर दूध - भात खिलाती थी। मायेजी की ही प्रेरणा से बालदेव ने अपना नाम सुराजियों में बना लिया। बालदेवजी गांधीवादी है लेकिन गांधीवाद का अर्थ नहीं जानते। वे मूर्ख और कायर है। उन्होंने सत्य और अहिंसाका नाम तो सुन रखा है लेकिन उसका सही अर्थ नहीं जानते। जहाँ अन्याय का विरोध करना चाहिए वहाँ वे अहिंसा का नाम लेकर चुप हो जाते है। बालदेव की परिणति अंततोगत्वा लक्ष्मी के साथ विलासपूर्ण जीवन में होती है। इसके विपरीत कालीचरन में मानवीय संवेदना अन्याय के प्रति प्रतिशोध की भूमिका पर प्रतिष्ठित की गई है। कालीचरन मेरीगंज के कृषक मजदूरों तथा निकटवर्ती जंगल में रहनेवाले संथालों का नेता है। वह मुँहफट है। जहाँ भी गलत है, वह अपना विरोध प्रकट करता है।

वही बेदखल किसानों को जमीन पर अधिकार करने के लिए उकसाता है। बढ़ते हुये भ्रष्टाचार के बीच बेचारा गरीब ही हर बार मारा जाता है, कालीचरन यह सब देखता, समझता है। वह विरोध भी करता है। परंतु उससे कुछ भी नहीं होता। समय पर उसकी अपनी पार्टी के लीडर उसे धोका देते है। अन्याय का विरोध और मानवतावाद की भूमिका पर कालीचरन का संपूर्ण जीवन व्यक्त हुआ है। कालीचरन गरीब किसानों की सहायता करने के लिए हमेशा आगे रहता है। वह सभी लोगों को समझाता है, जमीन किसकी, जोतनेवालों की जो जोतेगा, वह बोयेगा, जो बोयेगा वह काटेगा। कमानेवाला खायेगा। पूँजिपतियों और जमींदारों को वह खटमलों और मच्छरों की तरह शोषक मानता है। वह हर स्थल पर अन्याय और भ्रष्टाचार का विरोध करता है। उसे एक खून के केस में फँसाकर गिरफ्तार किया जाता है। कालीचरन के माध्यम से लेखक ने एक सामान्य वर्गीय समाजवादी की नियति को बडी चतुराई के साथ रेखांकित किया है। चरखा सेंटर की मंगला-देवी के साथ कालीचरन के भावात्मक संबंध होने के कारण वह उसके आंगन में रहने लगती है।

मध्यवर्गीय पात्र में सुमरितदास भी आता है। सुमरितदास मध्यवर्गीय होने के बावजूद भी उसे गरीबों से सहानुभूति नहीं है।

वह उच्चवर्गीय तहसीलदार की रोटी पर पलता है। प्यारू यह बडा ही प्यारा पात्र मध्यवर्गीयों में आ जाता है। जवान लडकियों को वह " दैया " कहता है। मैला आँचल का और एक जो पात्र है वह चलित्तर कर्मकार। वह भी कालीचरन जैसाक्रांतिकारी व्यक्ति है। अंग्रेज मिलिट्री भी उसे नाम से काँपती थी।

बावनदास भी मध्यवर्गीयों में एक सुराजी है। परंतु सुराजी होने से पूर्व वह अज्ञात कुलशील जन्मजात साधु था। बापू के सानिध्य ने बावनदास के जीवन की दिशा बदल दी। बावनदास को भी माया ने मोहना चाहा परंतु गांधीजी की तस्वीर देखने के बाद वह आत्मशुध्दि, इंद्रिय शुध्दि और प्रायश्चित के लिए सात दिनों का उपवास व्रत लेता है। वस्तुत: बावनदास मध्यवर्गीयों में एक आदर्श पात्र है। इसने स्वयं को गांधी के नाम पर देश सेवा के लिए समर्पित कर दिया है।

निष्कर्ष रूप में जो मध्यवर्गीय पात्र है उनमें कुछ समाज के लिए घातक भी है और कुछ समाज के लिए उपयोगी भी है। बालदेव एक ऐसा पात्र है जो प्रथमत: अच्छा सुराजी था परंतु बाद में वह बगुला भगत बन जाता है। राजनीतिक कार्यकर्ताओं में वह भी पाखंडी और भ्रष्टाचारी बनता है। परंतु इसके बिल्कुल विपरित स्वभाव का पात्र जिसका नाम है कालीचरन। वह गरीब जनता के प्रति प्रेम रखता

है। किसानोंपर होनेवाले अन्यायों का विरोध करता है। सभी लोगों को अपने हक के प्रति जागृत करता है। लेकिन कालीचरन को ही गिरफ्तार किया जाता है। वह जेल से भागकर आ गया। बावनदास नाम का जो मध्यवर्गीय पात्र है वह सच्चे अर्थ में आदर्श की ओर बढ गया है। क्योंकि वह पहले तो आदर्श पात्र नहीं था परंतु बाद में वह यहाँ आकर सच्चा काँग्रेसी और देशभक्त बन जाता है। बावनदास के साथी वासुदेव, सोमा, सुंदर भी डकैती के केस में पकडे जाते हैं। स्त्री पात्र मंगलादेवी मध्यवर्गीय पात्र है। उसने भी चरखा सेंटर चलाने का कार्य करके असंख्य बेरोजगार लोगों को रोजगार उत्पन्न करके दिया था। सुमरितदास जो मध्यवर्गीय होते हुये भी जमींदारों से मिला हुआ है। उसेगरीब जनता के प्रति दया नहीं है। वह सभी खबरे तहसीलदार को बताता है।

सारांश: मध्यवर्गीय लोगों का जब हम चित्रण करते है, जब हम उन्हें नजदीक से देखते हैं, तो उनमें भी अलग २ गुण दिखायी देते हैं। जिन्हें निम्नवर्गीय लोगों के बारे में जरा भी सहानुभूति नहीं है। उपन्यासकार ने मैला आँचल के मध्यवर्गीय लोगों के चरित्र के अंतर्विरोधों को कुशलता से चित्रित किया है।

३·४ फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में निम्नवर्गीय समाज का चित्रण -

वैसे देखा जाय तो वर्गों की पहचान उनके आर्थिक स्तर से होती है। फिर भी उच्च वर्ग का व्यक्ति यदि अर्थाभाव से पीड़ित हो तब भी उसे निम्नवर्ग में सम्मिलित नहीं करते। और इसी प्रकार तथाकथित निम्न जात के व्यक्ति को सहज ही उच्चवर्ग में शामिल नहीं करते। इसका ज्वलंत उदाहरण आज भी आरक्षण प्रणाली है, यह उच्च वर्ग के गरीबों की चिंता नहीं करती बल्कि केवल निम्न वर्ग की जातियों की गरीबी को ही गरीबी मानती है। हमारे देश में निम्न जातियों के ही लोग अत्यधिक गरीब है। उनकी वर्गीय निर्धनता तो उन्हें कष्ट देती ही है, उनकी वर्णगत हीनता भी उन्हें समाज में उपेक्षा अपमान और यातना का पात्र बनाये रखती है। निम्न वर्ग के लोगों का शोषण उच्चवर्गीय लोग करते है। हलवाही और मजदूरी करके पेट पालनेवाले लोग निम्नवर्गीय होते है। बडे खेतवाले हो या छोटे खेतवाले हो, सभी अपनी-अपनी सीमा में अपनी शक्ति भर निम्न वर्ग का शोषण करना चाहते है। निम्न वर्ग के लोग इनकी खेती में बसे होते हैं, इनके यहाँ मजदूरी करते हैं, इनकी बेगार भी करते हैं। वे निरंतर अभाव से ही गुजरते है। उच्चवर्गीय

लोग इनकी इज्जत से खेलते हैं। बडी जातियों के लोगों को ये मालिक समझते हैं। अपनी गरीबी को अपने पूर्व जन्म का कर्मफल समझते है। ये अशिक्षित होते हैं। ये नए ज्ञान - विज्ञान के आलोक से वंचित रहकर पुरानी मान्यताओं और अन्धविश्वासों के शिकार बनते है। परंतु आज इस प्रकार के ये लोग विवशता और उर्जा, पुरातनता और नवीनता जातीय पंचायत की जकडन और उसके प्रति विरोध के संक्रांत भाव से ग्रस्त दिखाई देते हैं।

३.५ निम्नवर्ग का सामाजिक पक्ष -

रेणु ने अपने उपन्यासों में इस वर्ग को उसके समग्र रूप में पहचानने का प्रयत्न किया है और इस वर्ग के आपसी संबंधों के अतिरिक्त मध्यवर्ग के साथ इनकी पहचान की है। निम्नवर्ग का चित्रण मैला आँचल में बडी मात्रा में दिखाई देता है। मेरीगंज गाँव में राजपूत टोली, यादव टोली, कायस्थ टोली के साथ निम्नवर्गीय लोगों की भी अनेक टोलियाँ है। पोलियाटोली, गहलोत छत्रीटोली, कुर्म छत्रीटोली, धनुकधारी छत्रीटोली, दुसाध टोली, कुशवाहा छत्रीटोली, रैदास टोली आदि निम्नवर्गीय लोगों की टोलियाँ हैं। इस टोली के लोग खेतिहर मजदूर है, बहुत गरीब हैं। सम्पन्न वर्ग के किसी - न - किसी के यहाँ ये

काम करते है। इनके अपने रीति - रिवाज हैं, अपनी पंचायत है। अपने अंधविश्वास है, अपनी जहालत है। अपनी मजबूरियाँ और शक्तियाँ है। इनके घरों में मध्यवर्ग के लोगों की घुसपैठ है। यह घुसपैठ कहीं तो निम्न वर्ग की कुछ औरतों के अपने सुविधावादी चरित्र के नाते है, कहीं उनकी आर्थिक विवशता और असहायता के कारण है। मेरीगंज के मेंहगूदास की स्त्री सुविधापूर्ण जीवन जीने के लिए ऊँची टोली के अनेक लोगों के साथ सम्बन्ध रखती है। वह अपनी बेटी फूलिया का भी इस कार्य के लिए इस्तेमाल करना चाहती है। पुरेनिया टीसन के खलासी मेरीगंज में आये हुये है और वे फुलिया से ब्याह करना चाहते हैं लेकिन फुलिया की माँ इसके लिए राजी नहीं होती। खलासी कहता है -

" मौसी, किसी तरह फुलिया से चुमौना ठीक कर दो।" 12

फुलिया भी माँ - बाप के सामने बोल नहीं सकती। अंदर - ही - अंदर उसका मन जलकर खाक हो रहा है। लेकिन वह कुछ भी बोल नहीं सकती। रमजूदास की स्त्री का कथन बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

" अरे फुलिया की माये। तुम लोगों को न तो लाज है और न धरम। कब तक बेटी की कमाई पर लाल किनारीवाली

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

साडी चमकाओगी ? आखिर एक हद होती है किसी बात की ? मानती हूँ कि जवान बेटी दुधार गाय के बराबर है। मगर इतना दूहो कि देह का खून भी सूख जाएँ। " 13

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट होता है कि निम्न-वर्गीय स्त्रीयों का जीवन सिर्फ भोग्या बनने के लिए ही है। ये निम्न वर्ग के लोग पैसों के लिए कुछ भी कर सकते हैं। उन्हें अपनी कोख से पैदा हुयी बेटी की भी परवाह नहीं होती। मँहगूदास की स्त्री और रमजूदास की स्त्री में झगडे होते हैं। ये दोनों भी एक दूसरे के परपुरुषों के साथ संबंध को स्पष्ट करती है। परपुरुषों के साथ संबंध रखना अपनी रोजी - रोटी कमाने का उनके लिए यहीं एकमात्र मार्ग था। इस प्रकार निम्नवर्गीय स्त्रियों की भी हालत बहुत ही बुरी बन गयी थी। रमजूदास की स्त्री " ततमा " टोली की सरदारिन है। टोले भर की जवान स्त्रियाँ उसकी मुट्टी में रहती हैं। वह राजपूत, बामन और मालिक टोले के सभी लालू बबुआन से मुँहामुँही बात करती है।

सम्पन्न मध्य वर्ग के लोग निम्न वर्गीय लोगों से मजदूरी कराते हैं, कम मजदूरी देते हैं, बेगार लेते हैं। निम्नवर्ग के साथ मध्यवर्गीय लोगों के क्या सम्बन्ध हैं, इसकी एक अच्छी झलक विदापत नाच के समय मिलती है।

" चहाक पटपट दडत सिर पर भागत बाप के भूतवा।
सबसे बढि के तोहरे बंदो मालिक बाबूक जूतवा। " 14

, व्यंग्य और विनोद में की गई यह वंदना मालिकों और नौकरों की कितनी बडी विसंगति का उद्घाटन कर देती है। मजदूरों का खुले आम शोषण होता है। डॉ॰ प्रशांत को मध्यनिम्न किसानों की हवेली और बेजमीन मजदूरों की झोपड़ियों में जाने का सौभाग्य या दुर्भाग्य प्राप्त हुआ। रोगियों को देखकर उठते समय छींके पर टँगी हुयी खाली मिट्टी की हांडियों से उसका सिर टकरायी है। उसने सात महीने के बच्चे को बथुआ और पाट के साग पर पलते देखा। वर्ग संघर्ष, अस्पृश्यता, भूख और बेकारी जैसे सामाजिक समस्याओं में पूरा गाँव जल रहा है। डॉ॰ प्रशांत ममता को पत्र लिखता है, " तुम जो भाषा बोलती हो, उसे ये नहीं समझ सकते। तुम इनकी भाषा नहीं समझ सकती। तुम जो खाती हो, ये नहीं खा सकते। तुम जो पहनती हो, ये नहीं पहन सकते। तुम जैसे सोती हो, बैठती हो, हँसती हो, बोलती हो, ये वैसा कुछ नहीं कर सकते। फिर तुम इन्हें आदमी कैसे कहती हो। " 15

मैला आँचल में जमींदार विश्वनाथ प्रसाद जमींदारी उन्मूलन विधेयक की सूचना पाते ही अपने क्षेत्र में कार्य करनेवाले संथालों को भूमि से हटा देते हैं। वे अपने द्वारा जोती बोई भूमि से व्यवसाय विहीन और अधिकारविहीन होकर नहीं जाना चाहते। परिणामत:

जमींदार के व्यक्तियों एवं संथालों में युद्ध होता है। संथाल जेल जाते है। भूमि का स्वामी जमींदार और विशाल भूमि का स्वामी बन जाता है। यहाँ रेणुजीने मेरीगंज के अंचल को केंद्रिय भूमि बनाकर हमारे सामाजिक जीवन में व्याप्त वर्गीय शोषण को भी अभिव्यक्ति दी है। और वे ये प्रकट करना चाहते हैं कि सामान्य व्यक्ति को मात्र जीवन निर्वाह के निमित्त कितनी विषमताओं और अन्याय के बीच रहना पड़ता है। आर्थिक दृष्टि से संपन्न वर्ग द्वारा किस प्रकार उसका शोषण होता है। और किस प्रकार शिक्षा, संस्कारों और साधनों के अभाव में शोषित होते रहने के अतिरिक्त उसके पास कोई विकल्प नहीं रहता। प्रतिकूल परिस्थितियों के मध्य जीते रहने के कारण शोषित होने और अन्याय सहते रहने की एक परम्परा सी उसके रक्त में घुल - मिल जाती है। मेरीगंज के अंचल में शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व निम्न वर्ग के संथाल जाति के लोग करते हैं। इनके परिश्रम से सैकड़ों बीघे परती, धरती आबाद करवा ली गयी है। लेकिन फिर भी इन्हें गाँववालों के साथ नहीं रहने दिया। ये निकटवर्ती जंगलों में ही रहते है। नीलहे साहबों के नील के हौजों में भी इन्हीं मूक इन्सानों का पसीना बहता रहता था। परंतु इन लोगों के पास अपने झोंपड़े बांधने के लिए जमीन नहीं है। ये लोग हल में जुते हुये बैल है। जो दूसरों के लिए काम करते हैं। उनका

किसी वस्तु पर अपना कोई अधिकार नहीं होता। वर्षों से वहाँ रहने के बाद भी उन्हें मेरीगंज का नहीं माना जाता। वे बाहरी आदमी है। उनकी फरियाद को सुननेवाला कोई भी नहीं है। जब भी वे अन्याय जुलुम के विरोध में आवाज उठाने का प्रयास करते हैं तो जोर - जुल्म और कानून का प्रयास करते हैं तो जोर - जुल्म और कानून दोनों तरफ से कुचल दिया जाता है। सेशन केस में उन्हें आजीवन कारावास भी सजा होती है। न्याय और न्यायालय भी धनवानों की संपत्ति है।

संथालों की ही भाँति गाँव में रहनेवाले मजदूरों की स्थिति है। उनका भी नियमित शोषण होता है। उनको सवा रुपये रोज मजदूरी मिलती है। जिनमें एक व्यक्ति का पेट भी नहीं भरता। महंगाई बढ रही है। लेकिन उन मजदूरों को कुछ भी नहीं मिलता। जमींदारों को अनाज की ऊँची दर के कारण लाभ हो रहा है। परंतु इस लाभ का विभाजन मजदूरों में नहीं होता। कपडे के अभाव में ये लोग अर्धनग्न रहते है। औरतें तो आँगन में काम करते समय एक कपडा कमर से लपेटकर काम चला लेती है। बारह वर्ष तक के बच्चे नंगे ही रहते है। अन्न के अभाव में जन - मजदूरों की हांडी माघ महीने में ही रंग गई है। गाँव में उनका जीना मुश्किल हो गया है। जमींदार लोग और

धनी हो गये है। लेकिन मजदूर दिन - प्रतिदिन गरीब होता जा रहा है। इसलिए मात्र दो रूपये रोज मजदूरी पाने के लिए वह अपना गाँव छोडकर शहर जूट - मिलों की ओर भागने लगता है।

निम्नवर्गीय लोगों के समाज में अंधविश्वास फैल गया है। मेरीगंज वाले मलेरिया सेंटर का विरोध करते है। जोतखीजी कहते है, अंग्रेजी दवा में गाय का खून मिलाया जाता है, डॉक्टर लोग रोग फैलाते है तथा सुई भोंककर आदमी के शरीर में जहर भरते है। और आदमी को हमेशा के लिए कमजोर बनाते है। अंधविश्वासी मनोवृत्ति के कारण मेरीगंज के लोग हैजा के समय कुएँ में दवा डालते समय दल बांधकर विरोध करते है। कमली की बेहोशी दूर करने के लिए उसका पिता जंतर बनवाकर लाता है। पार्वती की माँ को डायन माना जाता है। और डायन के करिश्में के कारण हीरु का बेटा मर गया ऐसा समझा जाता है। डायन के ईशारे पर साँप का प्रवेश घर में होता है, डाकिन के पैर उल्टे होते है, वह पेड की डाली से लटककर झूलती है, ऐसे अंधविश्वासों में यहाँ के लोग फँसे हुये है।

३.६ निम्नवर्ग का आर्थिक पक्ष -

निम्नवर्ग के लोगों की आर्थिक परिस्थिति बहुत ही खस्ते की है। संथालों की ही भांति गाँव में रहनेवाले मजदूरों की स्थिति है। उनको सवा रूपये रोज मजदूरी मिलती है, जिनमें एक व्यक्ति का पेट भी नहीं भरता। पाँच साल पहले पाँच आने रोज मिलते थे। और इसीमें घर के लोग खाते थे। अनाज की ऊँची दरते होनेवाले लाभ का भी फायदा किसानों को नहीं मिलता। आर्थिक परिस्थिति बिकट होने के कारण स्त्रियों को पहनने के लिए या अपनी शरीर रक्षा के लिए पूरा वस्त्र भी नहीं मिल पाता। दो रूपये मजदूरी के लिए लोग अपना गाँव छोडकर शहर में जा रहे है। आज भी ऐसी स्थिति दिखाई देती है कि देहात के लोग बिल्कुल मामुली काम के लिए शहर में जा रहे हैं। इसी के कारण शहरीकरण होने लगा है। आर्थिक प्राप्ति के लिए नारियाँ अपने को बेचती है। और तभी उनका घर चलता है। उदाहरण के लिए मँहगूदास की स्त्री अपनी बेटी फुलिया की शादी नहीं करती। क्योंकि फुलिया के माध्यम से उसे बहुतही अर्थिक प्राप्ति होती है। यह होनेवाला आर्थिक शोषण बंद करने के लिए तैनिक जी का भाषण निम्न जाती की जनता को जागृत करता है।

" जिस तरह सूरज का डूबना एक महान सच है, पूँजीवाद का नाश होना भी उतना ही सच है। मिलों की चिमनियाँ आग उगलेंगी। और अनपढ मजदूरों का कब्जा होगा। जमीनों पर किसानों का कब्जा होगा। चारों ओर लाल धुआँ मँडरा रहा है। उठो, किसानों के सच्चे सपूतों। धरती के सच्चे मालिकों उठो। क्रांति का मशाल लेकर आगे बढो। " 16 आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कालीचरन भी बहुत ही जागृति निर्माण करता है। आर्थिक परिस्थिति का वर्णन करते हुये डॉ. प्रशान्त ने लिखा है। - =" सात महीने के बच्चे को बथुआ और पाट के साग पर पलते देखा है। उसने देखा है ..... गरीबी, गंदगी और जहालते से भरी हुयी दुनिया में भी सुंदरता जन्म लेती है। " 17

" यहाँ के लोग सुबह को बासी भात खाकर, पाट धोने के लिए गंदे गड्ढों में घुसते हैं और करीब सात घंटे तक पानी में रहते हैं। " 18 यह दयनीय स्थिति है मजदूरों की। इसीलिये उन्हें बीमारी लगती है। आर्थिक परिस्थिति कमजोर होते हुये भी लोग नशीले, द्रव्यों का सेवन करते हैं। गरीबों, मजदूरों की आँखे कालीचरन ने खोल दी। पैसों से गरीबों को खरीदा जाता है। इसका विश्वास किसानों को दिलाया गया। आर्थिक परिस्थिति दयनीय होने के कुछ कारण है - बेरोजगारी, जनसंख्या में वृद्धि, भूमि का विषम विभाजन, शोषकों द्वारा

शोषण आदि।

परंतु मैला आँचल में अंत में इस प्रकार दिखाई देता है कि युगों - युगों से पीड़ित शोषित वर्ग जाग रहा है। रेणुजी के उपन्यासों में शोषितों की पनपती जागरूकता स्पष्ट लक्षित होती है। हलवाहे, चरवाहे, मजदूर, भूमिहीन अधिकार एवं हक प्राप्ति के लिए एक हो रहें है। नाई, धोबी, चमार आदि छोटी जातियाँ पुश्तैनी काम करने का विरोध कर रहीं है। इसलिए बडी जातिवालों को छोटी जातियों के सामने हाथ जोडना पडा है। पैसों के बल पर गरीबों को खरीदकर उनके जरिए किसानों के गले पर छुरी चलाने की उच्चवर्गीय नीति का विरोध होने लगा है। निम्नवर्ग के नेतागणों का उदय हो रहा है। वे नेतागण भोगी हुई शोषित जिन्दगी के विरोध में खडे होकर क्रान्ति का संदेश दे रहे हैं। फलत: वर्गद्वंद्व की भावना बढ रही है, जिसका संकेत मैला आँचल में मिलता है।

३·७ निम्नवर्ग की धार्मिक परिस्थिति -

अविकसित समाज में धर्म के नामपर पाखंड, आडम्बर, अंधविश्वास और व्यभिचार का प्रचार और प्रसार हो रहा है।

धर्म जब कुछ निठल्ले स्वार्थी और हीन प्रवृत्तिवाले लोगों के हाथ में जाता है तो उसे एक व्यवसाय का रूप प्राप्त होता है। " मैला आँचल " में भी इस प्रकार के लोग है, जिनके द्वारा मठ एक व्यवसाय क्षेत्र बन गया है। महंथ सेवादास, रामदास, लरसिंघदास, बूढे जोतिखी - नागाबाबा, ये सभी चरित्र धार्मिक पाखंड के नमूने है। महंथ सेवादास ने लछमी कोठारिन को मठ की दासी के रूप में रखैल बनाकर रखा है। महंथ जब लछमी को मठ पर लाता था तो वह एकदम अबोध थी। एक ही कपडा पहनती थी। " कहाँ वह बच्ची और कहाँ वह पचास बरस का बुढा गिद्ध। " १९ रोज रात लछमी बहुत रोती थी जिससे कि पत्थर भी पिघल जाय। सेवादास की भाँति ही रामदास भी व्यभिचारी ही है। महंथ एक बार पुरैनिया गया था तो सोच कि अब वह चैन से सोयेगी। परंतु बाघ के मुँह से छूटी और बिलार के मुँह में गयी। उसकेबाद लछमी बीमार पडने के कारण मरते - मरते बची। इसी लछमी को लेकर सेवादास की बसुमतिया महंथ के साथ लडाई हुई तो इसमें सेवादास की विजय हुयी और लछमी उसको मिल गयी। सेवादास के वकील ने लछमी को पढा लिखाकर शादी करने की सलाह दी थी, परंतु मठ पर लाते ही किशोरी लछमी को उसने दासी बना लिया। इसी के कारण सेवादास का महत्त्व कम हो गया। वह धर्म - भ्रष्ट हो गया।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

ब्रहमचारी के स्थान पर उसे व्यभिचारी कहा गया। इस धूर्त और स्वार्थलोलूप महंथ के पाखंड ने लक्ष्मी के मन में एक कुंठा भर दी। उसकी मृत्यु के पश्चात अपने अकेले क्षणों में लक्ष्मी सोचती है कि एक ब्रहमचारी को धर्मभ्रष्ट करने का पाप उसके माथे पर है। उसे लगता है कि यदि वह नहीं होती तो महंथ साहब सद्गुरु के रास्ते से नहीं डगमगाते।

महंथ सेवादास का सेवक रामदास भी पाखंडी है। सेवादास की मृत्यु के पश्चात मेरीगंज मठ की महंथी उसे मिलती है। रामदास को खंजडी बजाने के कारण महंथी प्राप्त हुयी थी। रामदास के लिए महंथी प्राप्त करना धर्मप्राण और लोकसेवा में रत जीवन व्यतीत करना नहीं है, बल्कि सुख - सुविधा और विलास भोगना है। एक - डेढ महीने की महंथी में ही रामदास का कलेवर बदल जाता है। " दुध, मक्खन और ताजे फलों के सेवन से महंथ साहब के शामल मुखमंडल पर भी लाली दौड गई है। "20 उसके तन का ताप मन को बेचैन बना देता है। वह लक्ष्मी को अपने निकट बुलाने लगता है। एक रात में तो वह धीरे - से उठकर लक्ष्मी की कोठरी के पास जाता है। लकडी फँसाकर किवाड की सिटकनी खोलता है। अस्त - व्यस्त कपडों में सोई पडी लक्ष्मी को भोगने की इच्छा उसको होती है। परंतु वह कुकर्म सफल

नहीं होता। रामदास के प्रति लछमी व्यवहार उसके लिए एक चेतावनी है। मठ की आमदनी और खर्च के हिसाब का भी उसे कोई ज्ञान नहीं है। वह समझगया है कि यदि इज्जत के साथ बैठकर दूध - मलाई भोग करना हो तो लक्ष्मी को जरा भी अप्रसन्न नहीं किया जाये।

और एक निम्नवर्गीय पात्र है लरसिंघदास। वह महंथ सेवादास के निधन के बाद नये बननेवाले महंथ (रामदास) को चादर टीका देने के लिए आनेवाले आचारजगुरु के आने की सूचना लेकर मेरीगंज में आता है। वह सोनमतिया कहारिन की बेटी रधिया को भगाकर नौटंकी कंपनी में शामिल हो गया था। परंतु लरसिंघदास को रधिया को वहीं छोडकर भागना पडा। महंथ साहब के शरीर त्यागने पर पुपडी मठ की महंती उसेही मिलती परंतु उस समय वह नेपाली गाँजे की स्मगलिंग करने लगा था। जिस समय महंथ साहब ने शरीर त्याग किया उस समय लरसिंघदास जेल में था। आचारजगुरु का संदेश देने के कारण जब वह मेरीगंज में आता है तो केवल " एक रात ही रहने के बाद महंथी का मोह उस पर सवार होता है। मेरीगंज मठ की संपत्ति विशाल है। नौ सौ बीघे की काश्तकारी। कलमी आम का बाग। दस बीघे में सिर्फ केला ही लगा हुआ है। एक - एक घौर में हजार केले फले हैं। हजरिया केला। दो कोडी गाय, चार गुजराती भैंस और सबसे कीमती संपत्ति - अमूल्य धन-

लछमी दासिन।"21 लछमी की हालत यह है कि वह उसकी छाया से भी बचकर चलती है। वह उसे बिलटा साधू कहती है।

कासी से आये आचारजगुरु नागा बाबा जो सभी मठों के नेता है। वे लछमी और रामदास से भद्दी- भद्दी गालियों के साथ बातें करते हैं। उनके सम्बन्धों में लछमी साली कुत्ती और छिनाल है। और रामदास कुत्ते का पिल्ला और सुअर का बच्चा है। नागा बाबा सबूत के सभाव में रामदास महंथी का टीका नहीं देना चाहते। क्योंकि लछमी सेवादास की रखैलिन थी, तो अब वह मठ में भी नहीं रह सकती। इसी बीच लरसिंघदास खुश है। उसे पूरा विश्वास हो गया है कि अब महंथी उसेही मिलेगी। महंथी के साथ - साथ लछमी पर भी उसका अधिकार हो जायेगा। परंतु इसके लिए कालीचरन विरोध करता है। वह जोर देकर कहता है कि रामदास इस मठ का चेला है। अत: महंथी उसेही मिलनी चाहिए। नागा बाबा उसे भी गाली देकर चुप कराने की कोशिश करता है परंतु कालीचरन उसे मार - पीट करता है, तभी नागा - बाबा का नशा उतर जाता है और वह भागने लगता है। इस संपूर्ण योजना के माध्यम से लेखक ने धार्मिक विश्वासों के खोखलेपन और धर्म तथा आस्था के उस पाखंड पर तीव्र व्यंग्य किया है जो तर्क

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

और साहस के सामने अधिक समय तक खडा नही रह सकता।

निम्नवर्गीय ग्रामीणों के बीच पाखंड का प्रसार ज्योतिषी करते है। वे हमेशा भविष्य में किसी अहित की चिन्ता से व्यग्र रहते है। भविष्य की चिंता बतलाकर अपना उल्लू सीधा करना और ग्रामीणों में भय को बनाए रखना ही जैसे इनका कर्तव्य है। इस वर्ग के लोगों की भविष्यवाणियों में कभी कोई आस्था या रचनात्मकता का स्वर नहीं होता। उन्हें हमेशा किसी - न - किसी प्रकार के अनिष्ट की आशंका होती है। " कोई माने या नहीं माने, हम कहते हैं कि एक दिन इस गाँव में गिद्ध कौआ उडेगा। लच्छण अच्छे नहीं है। गाँव का ग्रह बिगडा हुआ है। किसी दिन इस गाँव में खून होगा, खून। पुलिस दारोगा गाँव की गली -गली में घूमेगा। और वह इसपिताल ? अभी तो नहीं मालूम होगा। जब कुएँ में दवा डालकर गाँव में हैजा फैलायेगा तो समझना। " 22

निष्कर्ष रूप से यह स्पष्ट होता है कि हमारे समाज में एक ऐसा वर्ग है जो अपने स्वार्थ के लिए एक ओर समाज में होनेवाली प्रत्येक प्रकार की प्रगति का विरोध करता है। और दूसरी ओर धर्म के नामपर अनेक प्रकार की विसंगतियों और पाखंडों को बढावा

देकर अधर्म फैलता है। और चारित्रिक पतन का कारण बनता है। ये सन्त और महन्त कहलानेवाले लोग वैयक्तिक कुंठाओं के शिकार होते हैं और भोली जनता का शोषण करके ये अपने लिए दूध - मलाई बटोर लेते हैं। सामाजिक हित से इनका कोई सरोकार नहीं होता। अशिक्षित जनता इस मुखौटे में छिपे इनके असली रूप को नहीं देख पाती इसीके कारण ही अशिक्षित जनता का शोषण होता रहता है। परिणामस्वरूप नैतिक रूप से भ्रष्ट व्यवस्था की यह परंपरा चलती रहती है। लेखक ने बडे सूक्ष्म संकेतों के माध्यम से यह निर्दिष्ट करना चाहा है कि धार्मिक पाखंड की इस प्रवृत्ति को जन - चेतना और शिक्षा के विकास द्वारा रोका जा सकता है।

३.८ निम्न वर्ग का सांस्कृतिक पक्ष -

निम्नवर्ग के लोग आर्थिक परिस्थिति से कमजोर है लेकिन वे अपनी संस्कृति तथा परंपरा से अलग नहीं होते। सालभर जिन त्योंहारों को पर्वों, को मनाया जाता है। उन्हें ये लोग चाहे कुछ भी पास न हो फिर भी है। खुशी के साथ मनाते है। महँगी पडे या अकाल हो, पर्व त्योहार तो मनाना ही होगा। और होली का त्योहार तो उनके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण त्योहार है। त्योहारों के

के समय ये लोग खूब नाचते हैं, गाते हैं। फागुआ का हर गीत देह में सिहरन पैदा करता है। होली के त्योहार के कारण गाँव की फुलिया खलासीजी, उसका पति के साथ शहर जाने से साफ मना करती है। खलासी-जी जब रूठ कर जाने लगे तो फागुन की मस्ती में डूबी फुलिया गाँव के रमजूदास के आंगन में अपनी मस्ती भरी धमकी देती है।

" नयना मिलानी करी ले ले सैयाँ,

नयना मिलानी करी ले।

अबकी बेरे हम नैहर रहबौ,

जे दिल चाह्य से करी ले। " 23

यह फुलिया का गीत बहुत ही सुंदर है, जो उसने होली के समय गाया था। इन लोगों मे डाक्टर भी शामिल होते है। फुलिया को खलासी जी होली के लिए एक रुपया दे देते हैं।

फागुआ राह में चलते हुये गाने के लिए निम्न-लिखित गीत को लिया जाता है।

" आई रे होरिया आई फिर से। आई रे।

गावत गांधी राग मनोहर

चरखा चलावे बाबू राजेंदर

गूँजल भारत अमहाई रे। होरिया आई फिर से।

वीर जमाहिर शान हमारो,

बल्लभ है अभिमान हमारो,

जयप्रकाश जैसो भाई रे। होरिया आई फिर से।24

इनकी संस्कृति में भजन, बीजकपाठ और सतसंग को भी महत्त्व दिया है। महंथ रामदास भंडारी के हाथ से खँजडी लेकर बजाता है और लछमी गाती है।

" संतो हो, करौ बँहियाँ बल अपनी

छाडूँ बिरानी आस।

संतो हो, निंहिं अँगना नदिया बहै,

सो कसैं मरे पियास। हो संतो, सो कसे मरे पियास।" 25

शाम के समय घूर के पास " लोरिक " या कुमर बिज्जेभान की गीत कथाएँ भी होती हैं।

कालीथान में पूजा के दिन ढोल की ताल भी बदल जाती है, आवाज भी बदल जाती है। -

धागिड धिन्ना, धागिड धिन्ना।

... जै जगदंबा। जै जगदंबा।

गाँव के रक्षा करो माँ जगदंबा।" 26

इस गाँव के निम्न लोगों में बिदापत नाच होता है। सेवादास के मरने के बाद " कीरतनियाँ लोग " समदाउन शुरू करते है - रामदास खँजडी बजाबजाकर " निरगुण " गाता है। ये सभी इनकी संस्कृति का अंग है।

अन्य आँचलिक उपन्यासों की अपेक्षा रेणु के आँचलिक उपन्यासों को उद्‌घाटित करने के लिए इन लोकउपादानों का अधिक प्रयोग हुआ है।

सभी वर्गों में अनैतिक संबंधों की स्थिति है। डॉ॰ प्रशांत भी इससे छूटते नहीं है। वे भी कमली से संबंध रखते है। मठ की दासिन लछमी को सेवादास, रामदास, नागा बाबा आदि सभी भोगना चाहते है। फुलिया " खलासी " से विवाह रचाती है। और " सहदेव मिसिर " से अनैतिक संबंध रखती है। यही स्थिति रामपियारिया और रधिया की है। चरखा संघ की मंगलादेवी के बारे में भी अनेक किस्से प्रचलित है। इसके लिए एक मात्र कारण है कि वहाँ की अशिक्षा, कुसंस्कार, असंस्कृत परिवेश। संस्कार तो माता - पिता व्दारा दिये जाते है। लेकिन माँ ही बेटी को धंधेपर लगाती है।

इनकी संस्कृति की महत्त्वपूर्ण विशेषता है कि

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

लोकगीत बहुत सहज प्रणय भावना के साथ - साथ वहाँ के पर्व - उत्सवों, विवाहादि मांगलिक कार्यों को सजग बनाते हैं। निम्न वर्ग की जाति में ननद - भाभी के परिहास लोकप्रसिध्द है॥ ननद भाभी के सम्मुख अपने मन की आकांक्षा भी रख देती है। वह युवा हो गयी है। लेकिन अभी तक उसका गौना नहीं हुआ। इसका गीत भी गाडीवान पक्की सडक पर गाते हुये चलते है।

" चढली जवानी मोरा अंग अंग फडके से
कब होइहै गवना हमार रे भऊजिया । " 27

यहाँ के लोगों की संस्कृति है कि फाल्गुन की बसंत ऋतु में नववधु का गौना होता है॥ यहाँ की संस्कृति के अनुसार होली में सबकुछ माफ होता है। होली का सार्वभौम नायक श्याम है। गोरी की बाँहे पकडना उसका झकझोरना और उसकी चूडियों का फूट जाना - ये सारी विनोद-विलास क्रियाएँ क्षम्य है॥ इस प्रकार मैला आँचल में निम्नवर्गीयों का सांस्कृतिक जीवन चित्रित हुआ है। निम्नवर्गीयों में वर्षा न होने पर इन्द्र को रिझाने के लिए जाटजाटिन का खेल खेलने का रिवाज है। उनका विश्वास है इस खेल से इंद्र महाराज अवश्य प्रसन्न होंगे और मूसलधार वर्षा होगी। महिलाएँ खेल खेलते हुये गाती है -

" सुनरी हमर जोटिनियाँ हो बाबूजी,
पातरि बाँस के छौंकिनियाँ हो बाबूजी,
गोरी हमर जोटिनियाँ हो बाबूजी,
चाननी रात के इँजोरिया हो बाबूजी,
नान्हीं - नान्हीं दँतवा, पातर ठोखा ...
छटके जैसन बिजलिया " .... I " 28

वर्षारंभ होते ही बारहमास की तान छिड जाती है -

" एहि प्रीति कारन सेत बाँधल,
सिया उदेस सिरि राम है I
सावन हे सखी, सबद सुहावन,
रिमझिमि बरसत मेघ हे I " ... 29

गाँव की महिलाएँ वैवाहित जीवन के हास - विलास को व्यक्त करनेवाले लोकगीतों की धुन से अपने आँगन - मैदान सजाती है I रूठी हुई सुंदर और जवान जोटिन पत्नी पति या परिवारवालों से रूठकर नैहर चली जाती है I जाट उसे खोजता हुआ जा रहा है I इस प्रसंग का यह गीत स्थिति के संदर्भ में अतिशय मार्मिक बन पडा है I जाट-जोट्टिन के खेल में जोट्टिन बनी है रनापियरिया, और जाट बनी है कोयरी टोला की मखनी I मखनी ठीक मर्द - जैसी लगती है I

"जाट - जट्टिन " अभिनय के साथ और भी सामयिक अभिनय व्यंग नाट्य बीच - बीच में होते हैं। फुलिया बनी है डाक्टर। उसने कमल के फूल की डंडी का आला बनाया है। सनिचरा का नया पैजामा माँग लाई है। और बिहुला नाचवालों के यहाँ से साहबी टोपा और कोट माँग लाई है। वह कहती है - "

" ए मैन। इदार आता हाए। बोलो क्या होता हाय। "

" हुजूर। थोडा सिर दुखता है, थोडा आँख भी दुखता है, थोडा कान भी दरद करता है और कलेजा भी धुकधुक करता है। सर्दी भी होता है, गर्मी भी लगता है। भूख नहीं लगता है और जब भूख लगता है तो खाना नहीं मिलता है। " 30

सांस्कृतिक जीवन कितना हँसी - खेल का है इसका यह सुंदर उदाहरण है। परंतु अंतिम कथन सच्चाई को प्रकट करता है। परिस्थिति का भी प्रभाव निम्न लोगों पर पडा है। हँसते - खेलते भी वे अपनी सच्चायी को नहीं भूलते। वहाँ का रिवाज था कि जाट - जट्टिन का खेल मर्द नहीं देख सकते। यदि छिपकर देखा भी तो बात पंचायत में चली जायेगी। जिसकी मूँछे नहीं उगी हैं, वह देख सकता है।

रेणुजी ने उत्सवों, पर्वों का विस्तृत आलेखन

प्रस्तुत किया है। चैत संक्रांति के दिन मनाये जानेवाले पर्व को सतुआनी पर्व कहते है। इस अवसरपर सत्तू खाने का रिवाज है। सामूहिक मछलियाँ पकडने का पर्व " सिखा " कहलाता है। यह पर्व साल के प्रारंभ में पहली ... वैशाख को मनाया जाता है। इस दिन चुल्हा जलाना निषिद्ध माना जाता है।

भँडावा, सुराजी गीत, किराती गीत आदि महत्त्वपूर्ण वैयक्तिक सुख - दुखात्मक गीत गाये जाते थे।

फणीश्वरनाथ रेणु के मैला आँचल के मेरीगंज गाँव में अनेक लोककथाएँ प्रचलित है। जैसे सुरंगा - सदा ब्रिज की कथा, कुमर बिज्जेभान की कथा, लोरिका की कथा, कमला मैया की कथा, कौआ वैध की कथा। मेरीगंज के तंत्रियाँ टोली में महँगूदास के घर लोग जमा हैं। यह गाँव के लोगों की झाड़ फूँक करता है। सुरंगा - सदा ब्रिज कथा के प्रसंग में सदाब्रिज पर आसक्त स्त्री का कथन यहाँ दृष्टव्य है -

" सासू मोरा। मरे हो, मेरे मोरा बहिनी से,
मेरे ननद जेठ नोर जी।
मरे हमर सबहुक पलिबरवा से,
फसी गइली परेन के डोर जी। "31

निष्कर्ष रूप में मेरीगंज में रहनेवाले लोग आर्थिक परिस्थिति से कमजोर हैं लेकिन वहाँ के लोग अपनी संस्कृति तथा परंपरा से अलग नहीं होते।

संदर्भ -

१. फणीश्वरनाथ रेणु , " मैला आँचल " , पृष्ठ - ५

२. वही " , पृष्ठ - ४९

३. वही , पृष्ठ - २५

४. वही , पृष्ठ - १६

५. वही , पृष्ठ - १५

६. डॉ॰ अंजली तिवारी, फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य पृष्ठ - ५६

७. डॉ॰ अंजली तिवारी, फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य पृष्ठ - ४२

८. डॉ॰ प्रदीपकुमार शर्मा, हिन्दी उपन्यासों का शिल्पविधान, पृष्ठ - २४१

९. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल, पृष्ठ - ११

१०. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल , पृष्ठ - १०३

११. वही , पृष्ठ - १४८

१२. वही , पृष्ठ - ५८

१३. वही , पृष्ठ - ५९

१४. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल, पृष्ठ - ७८

१५. वही, पृष्ठ - १७५

१६. वही, पृष्ठ - १०३

१७. वही, पृष्ठ - १४४

१८. वही, पृष्ठ - १५०

१९. वही, पृष्ठ - २५

२०. वही, पृष्ठ - ११३

२१. वही, पृष्ठ - ६१

२२. वही, पृष्ठ - २८

२३. वही, पृष्ठ - १२३

२४. वही, पृष्ठ - १२६

२५. वही, पृष्ठ - ११३

२६. वही, पृष्ठ - ६८ - ६९

२७. वही, पृष्ठ - ६९

२८. वही, पृष्ठ - १८० - ८१

२९. वही, पृष्ठ - १८४

३०. वही, पृष्ठ - १८१

३१. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल , पृष्ठ - ५७